27/5/20 3:35 Tanveer group

SOCIOLOGY

B.A. I. Soc. Hon.
Paper I
M.A. John.

Manifest and Latent Function

Functionalism की चर्चा करते हुए Merton ने इसे दो भागों में विभाजित किया है जिसे Manifest तथा Latent function कहा जाता है। किसी भी इकाई के ऐसे कार्य जिसका परिणाम से सभी ज्ञात हो तथा उस इकाई के सभी सदस्य पहले से ही उससे परिचित होते हैं तो प्रत्यक्ष प्रकार्य कहते हैं। परन्तु निहित प्रकार्य उसे कहते है जो समाज के लिये उपयोगी तो होते हैं लेकिन अप्रत्यक्ष होते हैं। तथा इनकी प्रकृति को गहन अध्ययन से ही जाना जा सकता है। प्रत्यक्ष प्रकार्य सामाजिक चेतना आदि एक मत में वृद्धि करते हैं। जबकि किसी इकाई के निहित प्रकार्यों का कार्य एक समाज की संस्कृति को स्थायी बनाये रखना होता है।

(1) Manifest Functions: (प्रत्यक्ष प्रकार्य) Merton ने यह विचार दिया है कि प्रत्यक्ष प्रकार्य वह वैषयिक परिणाम है जो सामाजिक व्यवस्था के अनुकूलन को मदद उत्पन्न करते हैं। तथा जो उस व्यवस्था में भाग लेने वाले व्यक्तियों द्वारा इच्छित और मान्य होते हैं। अर्थात प्रत्यक्ष प्रकार्य वह हैं जो जन साधारण के सामान्य लक्ष्यों को पूरा करते हैं और इनकी पहले से ही व्यक्तियों द्वारा आशा की जाती है। इन प्रकार्यों को समझने के लिए हमें बहुत अधिक बुद्धि का उपयोग नहीं करना होता है। उदाहरणस्वरूप शिक्षा का एक प्रकार्य व्यक्ति को आजीविका प्राप्त करने की योग्यता प्रदान करना है। यह शिक्षा का प्रत्यक्ष प्रकार्य है। जिससे व्यक्ति पहले से ही परिचित होता है और यह आशा

Scanned by CamScanner

करता है कि व्यक्ति के परिणामस्वरूप के आजीविका पाने के योग्य बन सकेंगे। इसी प्रकार विवाह का प्रत्यक्ष प्रकार्य व्यक्ति को यौन संतुष्टि के अवसर प्रदान करता है अथवा कानूनों का प्रत्यक्ष प्रकार समाज में नियन्त्रण की स्थापना करना है। इससे स्पष्ट होता है कि सामान्य व्यक्ति किसी इकाई से जिन कार्यों की आशा करते हैं वह उस इकाई का प्रत्यक्ष प्रकार्य होता है।

2. Latent Functions: अप्रत्यक्ष प्रकार्य: Merton के अनुसार निहित कार्य वह हैं जो न तो इच्छित होते हैं न ही सामान्य लोगों द्वारा उन्हें पहचाना जाता है अर्थात प्रत्येक समाज में ऐसी बहुत सी संस्थाएं, रीतियां और लोकाचार होते हैं जिनके प्रत्यक्ष प्रकार्य कुछ मालूम होते हैं लेकिन उनके वास्तविक प्रकार्य कुछ और ही होते हैं। जैसे ~~संस्कृति~~ संस्कारों का प्रत्यक्ष प्रकार्य धार्मिक कार्यों को पूरा करना है जबकि इनका निहित प्रकार्य एक विशेष अवधि में व्यक्ति को उसके दायित्वों से परिचित कराना और उसका समाजीकरण करना है। राजनीतिक भोजों का भी निहित प्रकार्य पारस्परिक सम्बन्धों को दृढ़ बनाना और समस्याओं को सुलझाने के लिये अनौपचारिक वातावरण का निर्माण करना होता है। इन से यह स्पष्ट होता है कि निहित प्रकार्य वे परिणाम हैं जिनकी सामाजिक स्वीकृति अप्रत्यक्ष होती है और उन्हें समझने के लिये किसी इकाई के कार्य का सूक्ष्म रूप से विश्लेषण

करना जरूरी है।

इस प्रकार प्रत्यक्ष प्रकार्य Noutत एकाई का एक सामान्य और सम्भावित परिणाम है जबकि निहित प्रकार्य एक दूसरे से पृथक नहीं रहते।

—x—

Scanned by CamScanner